भगवत् कृपा

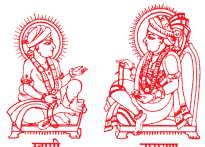

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 24 अंक : 6 | मंगलवार, 26-6-2001 | वार्षिक चंदा : 50-00

गुरुपूर्णिमा...

गुरु-शिष्य के संबंध को प्रगाढ़ बनाने का दिव्यपर्व **'गुरुपूर्णिमा'**
इस बार यूं तो 5 जुलाई 2001, गुरुवार को आ रहा है।
परन्तु,
इसी दिन चन्द्रग्रहण होने के कारण हम
4 जुलाई 2001, बुधवार की सुबह 6:30 से 8:15
गुरुपूर्णिमा निमित्त
महाराज व सभी के आदि गुरु गुणातीत, ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज
व
सभी गुणातीत स्वरूपों का
पूजन करके धून, भजन, दर्शन, सत्संग से लाभान्वित हो पाएंगे...

★

प्रसाद : 8:30 बजे

★

स्थान : श्री अक्षरपुरुषोत्तम (स्वामिनारायण) मंदिर , ***ताड़देव,***
काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-III दिल्ली-110 052 ★ फोन : 7229327, 7249327

★

सूचना: जो उपरोक्त समय पर सुबह लाभ लेने नहीं आ सकते, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'गुरुपूजन' कर सकेंगे।

तस्मै श्री गुरवे नमः

'गुरुपूर्णिमा' का महामंगलकारी दिन नज़दीक आ रहा है... शिष्यों के लिए मन, बुद्धि, चित्त, अहम् की आहुतिरुप गुरुदक्षिणा देने का दिन !

दरअसल तो गुरुपूर्णिमा महर्षि गुरु वेदव्यास की जन्मजयंती के उपलक्ष्य में मनाई जाती है। व्यासजी हमारे आदि गुरु के रुप में माने गए हैं, सो इसे **'व्यासपूर्णिमा'** भी कहा जाता है।

भारत की भूमि अनेक अवतार पुरुषों-सद्गुरुओं के प्रागट्य और महान ऋषि-मुनियों की घोर तपस्या, सामर्थ्य, रिद्धि-सिद्धि, शक्तियों के कारण अत्यधिक प्रसिद्ध रही है... वास्तव में देखा जाए तो इन ऋषि-मुनियों के त्याग आदि के कारण ही हम आज उजले हैं। यह उज्जवल भारतीय संस्कृति जो कि सनातन है–वह हमारा गौरव है। इसी कारण पूरे विश्व में आज 'भारत' का नाम खूब आदरपूर्ण लिया जाता है।

ऐसे भारत में हमें मानवदेह मिली ! और... **'भगवान का साक्षात्कार' मानव जीवन का सर्वोच्च ध्येय है।** उन भगवान के अस्तित्व की प्रतीति गुरु के जीवन से ही तो हमारे अंतर में होती है। गुरु ही हमारी श्रद्धा का स्रोत है और वे ही उसमें दिन-प्रतिदिन वृद्धि करते हैं। **गुरु इस ध्येय को पाने का सर्वोत्तम माध्यम है, इतना ही नहीं बल्कि भगवान का साक्षात्कार भी यदि एक बार हमें हो जाए, तब भी उस भव्य प्राप्ति को समझने व उसे टिकाये रखने के लिए गुरु आवश्यक है।**

सच ! धरती का अंधकार दूर करने के लिए सूर्य का होना जितना जरुरी है, उतना ही आध्यात्मिक जीवन में अज्ञानरुपी अंधकार को दूर करने सच्चे गुरु की प्राप्ति और उसकी आज्ञानुसार हमारी जागृत, स्वप्न व सुषुप्ति की सैकण्ड-सैकण्ड की प्रवृत्ति जरुरी है। हमारे बिना कहे हमारे योग और क्षेम की जवाबदारी उठा कर जन्म-मरण के रोग से मुक्त कराने वाले ऐसे गुरु ही हैं।

'स्वामी की बातों' में लिखा भी है कि– 'मानव देह मिलना दुर्लभ में दुर्लभ है, उससे भी अधिक दुर्लभ है–सत्संग मिलना तथा उससे भी दुर्लभ है–एकांतिकभाव सिद्ध करना !'

सौभाग्य से बिना कोई साधन करे आज ये तीनों बातें हमारे लिए प.पू. शास्त्रीजी महाराज, प.पू. योगीजी महाराज, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई जैसे गुणातीत स्वरुपों की अद्भुत प्राप्ति द्वारा सुलभ बनी है। यूं कहें कि हमारे इस मानवजन्म को सार्थक करने वाले गुरु गुणातीत मिल गए !

जैसे अर्जुन को नारायणस्वरुप बना कर न्याल कर दिया, वैसे ही इन समर्थ गुणातीत स्वरुपों का प्रेम शिष्यों की आत्मा के श्रेय के लिए निरंतर बहता ही रहता है। सो, हम अपने आपको जितना भाग्यशाली मानें उतना कम है। तो, सर्वप्रथम 'गुरुपूर्णिमा' के महामंगलकारी अवसर पर गुणातीत स्वरुपों–जिनके द्वारा गुरुपरंपरा अस्खलित रही, उनके चरणों में कोटि-कोटि वंदन !

और... गुणातीत समाज के मुक्तों के लिए गुरुपूर्णिमा का विशेष महत्त्व यह है कि–

– हमारे स्वभाव, प्रकृति, अंहकार को गुरुचरणों में अर्पण करने का यह दिन !

– अंतःकरण को टटोलने का दिन !

– मन की गुलामी में से मुक्त होकर अखंड प्रभु की मूर्ति में निमग्न रहने की निष्ठा दृढ़ करने का दिन !

– आंतरिक अंतराय दूर करके प्रभु के करीब होने का दिन !

– अज्ञान, अंधकार और अहंकार के पड़ावों के पार बैठे प्रभु को पहचानने का दिन !

गुरु का पूर्णतया अनुभव होने के बाद शिष्य को गुरु की हर एक क्रिया दिव्य ही लगनी चाहिए। गुरु में दिव्यभाव रखना शिष्य का प्रथम कर्तव्य बन जाता है। प.पू. काकाजी के मुख से हमने कई बार सुना था कि– **'गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज की किसी क्रिया में मुझे कभी भी मायिकभाव नहीं आया। मुझे उनकी सभी क्रियाएँ जँचती थी।'** हम सभी जानते हैं कि गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज ने कितनी कड़ी प्रकृति ग्रहण करी थी... एक बार तो दो आने के लिए सड़क पर तांगे वाले रसूलमियां से झगड़ा मोल लिया था ! तब भी प.पू. काकाजी को संकल्प तक नहीं उठा कि गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज ये क्या कर रहे हैं ? उन्हें अपने गुरु की सभी क्रियाएं दिव्य लगती थीं और तभी तो वे गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज और गुरुहरि योगीजी महाराज के लाडले मानसपुत्र बन कर उनके वारिसदार बन पाए !

परोक्ष में 'गुरुभक्ति' का उदाहरण देने के लिए सत्यकाम जाबाली व एकलव्य को हमेशा याद किया जाता है।

ब्रह्मज्ञान पाने की इच्छा से **सत्यकाम जाबाली** गुरु के पास जब गए, तब गुरु ने उन्हें एक गाय देते हुए कहा कि इस गाय में से चार सौ गाय हो जाए तब मेरे पास ब्रह्मज्ञान पाने के लिए आना ! हम विचारें कि ऐसा यदि हमें कहा हो, तो मायिकभाव के कई-कितने विचार में हम डूबे रहेंगे कि–

इन्हें मुझे ब्रह्मज्ञान देने की इच्छा ही नहीं लगती, सो टरका रहे हैं, या तो–

कब एक गाय में से चार सौ गाय होगी ? इसमें तो कितना समय लगेगा ?

या तो–

गायों की संख्या बढ़ाने व ब्रह्मज्ञान का भला आपस में क्या ताल्लुक ? वगैरह... वगैरह...

पर, सत्यकाम जाबाली ने गुरु के वचन में ज़रा भी शंका नहीं करी। 'गुरु' को उसने वाकई 'गुरु' माने थे और मानता होगा कि–

धी वेईझ ऑफ धी डिवाईन आर बियोन्ड धी कोम्पास ऑफ इन्टलेक्ट !

सो, श्रद्धा व दिव्यभाव से गुरु का वचन पकड़ कर वो तो एक गाय को लेकर जंगल की ओर चल पड़ा ! हम यह सुनते हैं, बोलते हैं, दोहराते भी रहते हैं, पर ऐन मौके पर स्वीकारते नहीं–मानते नहीं ! सो ही प.पू. काकाजी कहते थे–अब सुनो नहीं, सोचो नहीं, स्वीकारो !

ऐसे ही गुरु द्रोणाचार्य ने **एकलव्य** को जब जातिभेद की वजह से बाणविद्या सिखाने से मना ही कर दी, तो एकलव्य ने गुरु द्रोणाचार्य की मूर्ति बना कर ही अपने आप अथक् परिश्रम करके बाणविद्या सीखी ! और... जब गुरु द्रोणाचार्य को इस बारे पता चला तो उन्होंने गुरुदक्षिणा में एकलव्य से उसका दाएं हाथ का अंगूठा मांगा, जो कि बाण चलाने में आवश्यकरुप से चाहिए ही ! गुरु द्रोणाचार्य अपने शिष्य अर्जुन को ही सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर देखना चाहते थे। फिर भी–एकलव्य ने एक भी क्षण का विलंब किए बिना अंगूठा गुरुदक्षिणा में दे दिया ! क्या एकलव्य के मन में नहीं आया होगा कि गुरु द्रोणाचार्य ने पक्षपात करके अपने चहेते अर्जुन का ही पक्ष रखा और मुझे हमेशा के लिए लाचार जैसा कर दिया।

हमें तो ज़रा-सी बात में गुरु के प्रति तुरंत भावफेर हो जाता है कि गुरु इसके ज्यादा हैं, मेरे कम... गुरु को पक्षपात है... फलांने ही इनके ज्यादा चहेते हैं वगैरह-वगैरह... पर, एकलव्य ने मन-बुद्धि को टोटल ठुकरा कर गुरु पर सब कुर्बान करने की भावना रखी !

गुणातीत स्वरुपों का जीवन निहारेंगे तो उन्होंने भी निरंतर कसनी में रह कर गुरु के वचन में ही फनां होने का एकमात्र निशान रखा... **अ.म.मु. भगतजी महाराज** का प्रसंग तो हम सभी ने अनेकों बार सुना है। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंद- स्वामिजी के लिए सर्वस्व चूरचूर कर देने वाले पू. भगतजी महाराज को संस्था ने विमुख किया, फिर भी... भगतजी महाराज अमदावाद मंदिर के बाहर बैठ कर आते-जाते हरिभक्तों व संतों के दिव्यभाव से दर्शन करते...'जय स्वामिनारायण' कहते। यूं वहां एक बार उन्होंने तीन दिन से खाया-पीया नहीं था। जब मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने बाहर यूं भगतजी महाराज को बैठे देखा, तो कोठारी से पूछा कि भंडार में कुछ है ? कोठारी ने कहा कि बासी खिचड़ी है। स्वामिजी ने भगतजी महाराज को तीन दिन की वो बासी खिचड़ी देने कहा। भगतजी महाराज ने वो खिचड़ी–जिसमें से बू आती थी व तार निकलते थे वह अहोभाव से- महिमा से प्रसाद समझ कर खाई !

इस जगह पर हम अपने आपको रख कर सोचें कि यदि हमारे गुरु ने हमारे साथ ऐसा किया हो तो मन से कई कितने प्रकार के उलाहने-कटाक्ष देने लग पड़ेंगे ? अरे ! यहां तक कि शायद सत्संग ही छोड़ देंगे या तो दस जनों को बतायेंगे कि देखो मेरे साथ स्वामी कैसा बर्ताव कर रहे हैं ? या आखिर– 'कितनी कसौटी कर रहे हैं ?'–यूं कह कर अपना बड़प्पन जताने व अन्यों से हमदर्दी पा लेने की कोशिश में लग पड़ेंगे। ऐसे प्रसंग पर दिव्यभाव रखने व महिमा की तो बात तो कहीं दूर रह जाएगी... हम मान के देवता को साथ देकर उल्टा स्वामी पर दोषारोपण लाद कर खुद की वृत्ति की संतुष्टि कर लेंगे।

पर, भगतजी महाराज ने ऐसे अनेक प्रसंगों पर दृढ़ता से दिव्यभाव पकड़े ही रखा था। उन्हें पूर्णतया ख्याल था कि यह गुणातीत साधु राख के मूल्य सोना दे रहा है और इस गुणातीत गुरु पर तो ऐसे हजारों देह कुर्बान है ! और... गुरु गुणातीत भी अपने इस शिष्य की गुरुनिष्ठा, गुरुभक्ति से इतने अधिक राजी हुए कि अपना वारसा भगतजी महाराज को ही सौंपा...

भगतजी महाराज के तो हमने दर्शन नहीं करे, सिर्फ किताबों में ही यह सब पढ़ा है। पर, **प.पू. काकाजी** ने तो हमारी नज़र समक्ष कैसा अद्भुत 'गुरुभक्ति' का जीवन जीया ! एक तरफ जोरदार व्यापार चल रहा हो और बराबर उसी समय गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.भ. गुलजारीलाल नंदाजी के चुनाव लड़ने उन्हें साबरकांठा जाने कहा ! क्या प.पू. काकाजी को विचार नहीं आया होगा कि भला मेरा नंदाजी के चुनाव से क्या वास्ता ? और एक-दो दिन की भी बात नहीं, महीनों के लिए जाना ! पीछे व्यापार का क्या होगा ? वगैरह... पर, प.पू. काकाजी के लिए तो 'गुरुआज्ञा' यानि–बाकी सभी का पूर्णविराम ! हम सभी जानते हैं कि गुरु के वचन में दृढ़ श्रद्धा व विश्वास रख कर प.पू. काकाजी अत्यधिक मेहनत करके चुनाव जीते और बापा ने खूब राजी होकर उन्हें साक्षात्कार कराया। तत्पश्चात् प.पू. काकाजी बापा के अल्प संबंध वालों को भी सर के ताज मान कर आखिरी सांस तक जीए... हर एक की अत्यधिक परवरिश करी।

फिर भी हम बोले कि काकाजी ने हमारे लिए क्या किया ? और ये बातें भी वे जानते थे ! और तब भी वे तो बापा के संबंध से हमारे चैतन्य के जतन के लिए निरंतर लगे रहते ! हमारे प्रति की प्रीति में भावफेर स्वयं ने तो नहीं किया, कभी उपेक्षा तक नहीं करी। बल्कि, दूसरे अगर कुछ भावफेर की बात करते तो उन्हें भी प्यार से, डांट से, भजन से पोज़ीटीव ही समझा कर बल देकर अनोखी रीत से संभाल लिया ! इसे हम किस कक्षा की गुरुभक्ति कहेंगे ?

हमने तो कहीं थोड़ी-सी सेवा करी होती है, तो कितनी अधिक अपेक्षा रखते हैं। दूसरों के पास डायरेक्ट-इनडायरेक्ट गाते फिरते हैं कि ओहो ! हम तो सत्संग के लिए कर-करके

टूट गए, फिर भी–हमारी तो गिनती नहीं, किसी को कद्र नहीं... अब तो यहां पुरानों की कोई कीमत नहीं, नयों की– पैसेवालों की ही पूछ है, सारा काबू इनका ही हो गया है... वगैरह... वगैरह। और– दूसरों की बराबरी करते रहेंगे, दूसरों को नीचा दिखाने की कोशिश करते रहेंगे।

और फिर–इन विचारों के साथ-साथ, ऐसे वर्तन के साथ आशा यही रखेंगे कि गुरु की प्रसन्नता हमें भी मिलनी चाहिए।

पर, हम भूल जाते हैं कि **गुरु की आन्तरिक प्रसन्नता पाने के लिए तो 'स्व' को गुरुवचन में संपूर्ण पिघाल देना पड़ता है, मिट जाना होता है, दूसरों के साथ अहोभाव-महिमा व संबंध से ही जीना होता है... गुरु में अखंड दिव्यभाव रख कर जीने वाला शिष्य ही गुरु की प्रसन्नता पाता है–गुरु के तादात्मय को पाता है।**

ब्र.स्व. गुरुहरि योगीजी महाराज भी कहते थे–**'गुरु में दिव्यभाव रखना–वही गुरुपूजन है।'** प.पू. काकाजी कहते कि– **'गुरु के चरणों में शीश यानि–बुद्धि समर्पित करके दीनतापूर्वक प्रार्थना करनी कि– शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।** मैं आपका शिष्य हूँ, आपकी शरण में आया हूँ...'

लेकिन, अब तो इससे भी आगे की बात कि हर एक मुक्त के पल-पल का संचालन प्रत्यक्ष स्वरुप ही कर रहे हैं यूं दृढ़ता से मान कर, साथी मुक्तों में निर्दोषभाव रख कर, सुहृद्भाव के सिद्धांत पर अग्रसर होकर सौ प्रतिशत अंक पाने हम सच्चा गुरुपूजन करें और **'गुरुपूर्णिमा'** सार्थक करें–ऐसी गुरुचरणों में प्रार्थना !

✡✡✡✡✡

ताड़देव की गतिविधियाँ

हर साल की तरह इस बार भी प.पू. गुरुजी ने मंदिर के स्टाफ व सत्संग से जुड़े निजी निष्ठा वाले मुक्तों–जिनके जीवन में हर संजोगों में प्रथम स्थान पर भगवान व संत ही हैं, उन्हें आनंद कराने-स्मृतियाँ देने **'डलहौज़ी'** हिल स्टोशन पर ले जाने का प्रोग्राम बनाया... मुंबई, अमदावाद, वापी, सुरत, पानीपत, राजकोट आदि शहरों से भी सभी हरिभक्त 24 मई की सुबह तक में 'ताड़देव' दिल्ली मंदिर में एकत्रित हो चुके थे... पंजाब के हरिभक्त सीधे डलहौज़ी पहुँचने वाले थे।

किसी को घूमने-फिरने जाने आदि की तमन्ना तो तनिक भी नहीं थी, पर–एक ही बात की उमंग-उल्लास-आनंद था कि प.पू. गुरुजी के सान्निध्य, दर्शन, समागम का अमूल्य अवसर कहां से ?

24 मई 2001 की रात को 9:00 बजे जम्मू मेल से करीब ढाई सौ हरिभक्तों का संघ पहले पठानकोट पहुँचने के लिए दिल्ली से रवाना हुआ। प.भ. राकेशभाई शाह, प.भ. राजुभाई शाह, प.भ. अजय चावलाजी, प.भ. ज्योतिनभाई (वापी) एक दिन पहले ही सारी सुविधा करने वहां पहुँच चुके थे... 25 मई की सुबह करीब सवा आठ बजे तो सब पठानकोट स्टेशन पर पहुँच गए ! प.भ. अजय चावलाजी और प.भ. राजुभाई शाह ने स्टेशन पर ही सभी के चाय-नाश्ते की व्यवस्था कर रखी थी... प.भ. विजयभाई महेता के संबंध से प.भ. चीनाजी के यहां प.पू. गुरुजी व संतों के स्नानादि की व्यवस्था करी हुई थी... कोई पूर्व परिचय ना होते हुए भी प.भ. चीनाजी ने बहुत ही भक्तिभाव से संतों की सेवा के लिए अपना सारा घर खुला सौंप दिया ! प.भ. चीनाजी को एक-दो घंटे में ही प.पू. गुरुजी की अत्यंत सादगी भीतर तक स्पर्श कर गई !

प.पू. गुरुजी गाड़ी द्वारा और सारे भक्त पाँच बसों द्वारा करीब ढाई बजे तो डलहौज़ी पहुँच गए... सब के रुम्स आदि की सेटिंग दिल्ली से ही हो चुकी थी। सो किसी को भी किसी प्रकार की तकलीफ नहीं पड़ी... रुम्स में सामान रख कर दोपहर के प्रसाद के लिए सभी एकत्रित हो गए। दोपहर का प्रसाद लेकर सभी ने थोड़ा आराम किया... तत्पश्चात् शाम की सत्संग सभा का आयोजन था... पर, अब की बार पूरे चार दिन की ट्रिप दौरान इन्द्रदेव भी इन मुक्तों के साथ ही मौका लूट लेने मानो लालायित हो उठे थे... चारों दिन शाम को जैसे ही सत्संग सभा की शुरुआत होती तो अत्यधिक तेज़ हवाएँ व बरसात चालू हो जाती... प.पू. गुरुजी ने बताया कि महाराज अब की बार शायद ऐसा कह रहे हैं कि ज्ञान मत झाड़ो, बस ब्रह्मानंद करो।

रुम के बाहर बरामदे में ही प.पू. गुरुजी ने छोटी सभा करते हुए प.पू. काकाजी की एक खूब ही मार्मिक स्मृति से जुड़ा प्रसंग बताया–

वैसे प.पू. काकाजी की बातें सुनते, तो कई बार हमें उनकी बातों में रेलिवेन्सी जैसी नहीं लगती थी। लेकिन गौर से सुनने पर पता लगेगा कि वे जहां से बात की शुरुआत करते थे वहीं कन्क्ल्यूड करते थे। अरे ! मुझे याद आया–1955 में जब मैं प.पू. काकाजी के कॉन्टेक्ट में आया और पहली बार प.पू. काकाजी से बापा की मूर्ति लेने उनकी ऑफिस गया था तब उन्होंने कहा था कि–

'बापा एक सूर्य हैं और बापा के आशीर्वाद से हम भी एक सूर्य हैं...'

और...25 जनवरी 1986 सोखड़ा में गुणातीत द्विशताब्दी महोत्सव के समय प.पू. काकाजी ने **'जाओ–तीनों सूर्य एक...'** कह कर आशीर्वाद दिए ! फिर 7 मार्च 1986 को तो प.पू. काकाजी ने शरीर छोड़ दिया !!

यह प्रसंग ही तो स्पष्ट बताता है कि प.पू. काकाजी की सारी बातें चैतन्यलक्षी रहती व कन्क्ल्यूड होती थी... **'सूर्य' की**

बात करके उन्होंने मेरे साथ इस जीवन में संबंध जोड़ा था और वह कन्क्ल्यूड भी 'सूर्य' की बात से करा !

26 मई की सुबह नाश्ता करने के बाद सत्संग सभा थी। उसमें प.पू. काकाजी की परावाणी समझाते हुए प.पू. गुरुजी ने बातें करी... पहले स्वामिनारायण मंत्र की महिमा समझाई, फिर 'स्वामी की बातें' पढ़वाते हुए निम्न मुद्दे कहे–

महिमा की बातें निरंतर करनी और सुननी,
और कुछ सुनना ही नहीं...
प्रभु हरदम हमारे साथ हैं...
प्रगट का आसरा हमारा स्टेटस ही बदल देता है...
आनंद अखंड रखना हो, तो हम भक्तों की भक्ति करें...
हमारे प्रभु पल में चाहे सो करें, वो विश्वास रखना...
बिल्ली का बच्चा बनना...

26 की शाम को भी सत्संग सभा में बातें करते हुए बोले कि–

'नेगेटीव संजोगों में भी हम संत की आज्ञा मान लें
तो
हमारी समस्या हल हो जाएगी
और
हमें अनुभूति भी होगी कि
हमारे प्रभु कभी हमारा अहित नहीं करेंगे।
प्रगट प्रभु में लय और लीन रहेंगे,
तो उनकी अनुवृत्ति हमारे भीतर उतर आएगी।
कोई भी काम करें, प्रभु की स्मृति करके ही करें...
प्रभु के लिए हमें संसार-जगत छोड़ना नहीं है,
बल्कि हमारे संसार में-जगत में प्रभु भर देने हैं-बुन लेने हैं...'

27 मई की सुबह डलहौज़ी का मिनी स्विट्झर्लेंड जिसे कहा जाता है वहां–यानि**'खजियार'** घूमने गए... दोपहर को वहीं ठाकुरजी का थाल करके सभी ने प्रसाद लिया। शाम को करीब 5:00 बजे वापिस आए... थोड़ा विश्राम करके शाम को सत्संगसभा की शुरुआत तो करी, पर इन्द्रदेव अपना साज-सामान लेकर पूरे जोर-शोर से पधारे... सो सभा हो नहीं पाई।

28 मई की सुबह नाश्ते के पश्चात् धून्य-भजन के बाद सत्संग सभा में प.भ. वडिया साहेब (सुरत), प.भ. जयप्रकाशजी, प.भ. दालिया साहेब ने प्रासंगिक उद्‌बोधन करके प.पू. गुरुजी की महिमा की बातें करते हुए अपने अनुभव बताए कि गुरुजी के संबंध से उनके जीवन में कैसा परिवर्तन आया व हर प्रकार से कैसे सुख, शान्ति, आनंद मिला है। प.पू. गुरुजी ने अपनी बातों में बताया कि–

'प.पू. काकाजी ने एक बार बताया था कि रिद्धि-सिद्धि, ऐश्वर्य-प्रताप के कैंसर से तो सद्‌गुरु लोग पीड़ित हैं... बड़प्पन तो साधुता का है।'

फिर वचनामृत मध्य 63 का विस्तारपूर्वक निरुपण करते हुए प.पू. गुरुजी बोले कि–

'प.पू. काकाजी ने अपना कुछ भी प्यारा नहीं रखा। सत्संग में भी हमारा ईझम् जहां सेटीस्फाईड होता होगा, वहीं हमारी वृत्ति चली जाएगी और उसे सेवा समझ कर हम करने लग पडेंगे, लेकिन साधु जो कहेगा वो हम नहीं करेंगे। जब कि– प.पू. काकाजी ने अपना कोई ईझम् एन्टरटेईन करने महाराज के सिद्धांत से हट कर कोई काम नहीं किया, बस भगवान व भगवान के भक्त ही सब कुछ !'

किसी को भी घूमने-करने का कोई शौक जैसा ही दिखाई नहीं पड़ता था। बस, सारा दिन प.पू. गुरुजी के आस-पास ही उनके दर्शन करने, बातें सुनने में सब को जैसे अलौकिक आनंद मिल रहा था।

28 की शाम को फिर सत्संग सभा का आयोजन था। पर, इन्द्रदेव आज भी पधारे ! फिर कमरों में सेट होकर सभा करी।

प.पू. गुरुजी के पूर्वाश्रम के फूफा के लड़के **प.भ. किशोरभाई देसाई** करीब दो-तीन साल पहले चालीस वर्ष के पश्चात् प.पू. गुरुजी से मिले थे। वे और उनकी पत्नी–सौ. रागिणीभाभी डलहौज़ी ट्रिप में साथ में आए थे... सौ. रागिणीभाभी के ब्रेईन के दो ऑप्रेशन्स होने के कारण तबियत से वे बिलकुल कम्फरटेबल नहीं थे, पर खूब ही हिम्मत जुटा कर एक महिमा से प.पू. गुरुजी का लाभ लेने खास आए... और प.पू. काकाजी, प.पू. गुरुजी द्वारा तैयार किए एक छोटे लेकिन सुहृदभाव से जीते नूतन समाज को देख कर बहुत प्रभावित हुए ! प.भ. किशोरभाई ने शाम की इस सभा में अपनी बातों दौरान **'गुरुजी'** और **'सेवक'** शब्द की निम्न प्रकार परिभाषा बता कर मानो प.पू. गुरुजी को अपने गुरु के रुप में स्वीकारते हुए उनके प्रति स्वयं के सेवकभाव की अभिव्यक्ति करी–

गुरुजी यानि–'**गु**रु भक्तों' का **रु**दन जो दूर करे और उनका **जी**वन सार्थक करे वो **गुरुजी** !

सेवक यानि– समाज को गुरुजी के समीप पहुँचाने के लिए खुद **से**तु बन कर अपने **व**र्तमान को **क**र्तव्यनिष्ठा से जोड़ दे वो **सेवक** !

प.भ. किशोरभाई को एक ओर इस बात का दर्द था कि– 'चालीस साल तक मैं प.पू. गुरुजी से क्यों बिछड़ा रहा ? पर, फिर भी दूसरी ओर खुशी भी थी कि मैं खुशनसीब हूँ कि अब तो गुरुजी मुझे मिल गए...'

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने बातें करते हुए निचोड़रुप कहा कि–

'हम अपनी मनमानी से पूरी सड़क साफ करें, तो भी गवर्नमेन्ट हमें उसका मुआवज़ा नहीं देगी। पर, जमादार सरकार की नियुक्ति से करता है, तो उसे मिलता है। वैसे ही संत के वचन से जो सेवा-भक्ति करेंगे उसी का फल मिलेगा...

टेबल पर सौ मोमबत्ती पड़ी हों, और उनमें से यदि एक मोमबत्ती जली होगी, तो उसके द्वारा बाकी 99 जल पाएगी। इसी तरह जिसकी चेतना ब्रह्मभाव को पाई होगी, उसके द्वारा ही जीव की जीवदशा टल सकती है और ब्रह्मभाव प्रगट हो सकता है। हमें बस इतना ही करना है कि ऐसे समर्थ गुरु की गोद में बैठ जाना है...'

सभा के बाद सभी ने प्रसाद लिया... चार-पाँच दिन का किसी को पता ही नहीं चला और वापिस दिल्ली लौटने का भी समय हो गया... 29 मई की सुबह भी प.पू. गुरुजी ने एक छोटी सत्संग सभा करी और जगत में रहते हुए भगवान व संत के होकर रहने से सच्चा सुख, शांति, आनंद प्राप्त करने का सरल सूत्र दिया कि–

'अपने अंग के मुताबिक संत के साथ अनन्यभाव से जुड़ जाएं...'

तत्पश्चात् पूर्णाहुति की आरती हुई।

29 की दोपहर को तो 12:00 बजे के करीब डलहौज़ी से पठानकोट पहुँचने के लिए बसें रवाना होने लगीं, क्योंकि शाम को 6:20 पर दिल्ली लौटने की ट्रेन थी... शाम को सब दिल्ली वापिस आने की ट्रेन में प.पू. गुरुजी द्वारा दी अनेक स्मृतियों, सत्संग के बुनियादी सिद्धांत, प.पू. गुरुजी के अथक् परिश्रम के बारे सोचते-सोचते सुबह 5:30 बजे दिल्ली पहुँचे...

यहां भी इन्द्रदेव बहुत जोर-शोर से भक्तों के स्वागत में खड़े थे। पर, आश्चर्य तब हुआ जब स्टेशन पर भक्तों के सामान वगैरह उतारते समय तक बरसात रुक गई... सब को प्रभु की सर्वोपरि सत्ता का अनुभव हुआ कि ओहो ! हमें मिले प्रगट प्रभु तो हमें ज़रा भी तकलीफ - दुःख का स्पर्श नहीं होने देना चाहते... **जो कुछ भी दुःख है वह हमारे मन-स्वभाव का है। कसर हमारे लेने में है, संत के देने में नहीं।**

इस प्रकार 'डलहौज़ी' ट्रिप में सभी ने बहुत ही आनंद करा... भक्तों को पानी की कमी व सफाई वगैरह थोड़ी ठीक न होने के हिसाब से थोड़ी तकलीफ जरुर उठानी पड़ी। पर, तब भी सब के मन में प.पू. गुरुजी के दर्शन, सेवा, समागम के सुख का पलड़ा ज्यादा भारी रहा। प.भ. राकेशभाई शाह, प.भ. राजुभाई शाह, प.भ. अजय चावलाजी, प.भ. ज्योतिनभाई (वापी), प.भ. दिलीपभाई शाह आदि भक्तों ने बहुत ही भक्तिभाव से अत्यधिक परिश्रम करके इस शिविर को सफल बनाने का भरसक प्रयत्न किया... इन सभी की सेवा-भावना को खूब-खूब अंतर से धन्यवाद !

✡✡✡✡✡

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

- स्वामिनारायण मंत्र जीवंत मंत्र है। श्रद्धा, विश्वास व एकचित्त से हम स्वामिनारायण मंत्र का जाप एक महीना सुबह रोज़ चालीस मिनिट करेंगे, तो उसके फलस्वरुप हमारी प्रकृति बदलेगी, हमारा व्यवहार बदलेगा।
- चालीस मिनिट मूर्ति में लय और लीन होकर भजन करेंगे, उससे दो फायदे होंगे–हमारे भीतर तो पूरा बदलाव आएगा ही; साथ-साथ हर पल हमें क्या करना है वो अपने आप सूझ पड़ती जाएगी। धेन वी विल कोमिट नो मिस्टेक।
- सूर्य का पिक्चर हमें गर्मी नहीं दे सकेगा- प्रकाश नहीं दे सकेगा, हमारा अंधकार नहीं मिटा सकेगा... उसके लिए प्रगट सूर्य चाहिए। ठीक वैसे ही ऐसे गुणातीत संत-सूर्यसमान संत मौजूद होंगे, तभी हमारे जीवन में उजाला व परिवर्तन शक्य है।
- स्वामिनारायण संप्रदाय की विशेषता यह है कि गुणातीत परंपरा में ऐसी प्रभु रखी विभूतियाँ यहां प्रगट हैं। उनमें से हम जहां भी जुड़े हों, उनका स्मरण करके-स्मृति करके इनके गुणों का चिंतन करके अगर स्वामिनारायण मंत्र का जाप करते रहेंगे तो हमारे प्रारब्ध व प्रकृति बदलेगी...
- अर्जुन के जीवन में कृष्ण थे, तो उसके कुरुक्षेत्र का अंत आया। इसी तरह हमारे जीवन के कुरुक्षेत्र का अंत लाकर धर्मक्षेत्र प्रगटाना हो, तो मानव स्वरुप में कृष्ण जैसे समर्थ सारथी को जीवन में आगे रख कर उसके वचन से, उसकी प्रसन्नता के लिए हर कर्म करें। वो निष्काम कर्मयोग बनेगा और हमारा जीवन धर्मक्षेत्र बनेगा।
- **'भगवान हैं'**– उसका प्रूफ क्या ? यह सारा ब्रह्मांड चल रहा है, वो ही साबित करता है कि भगवान हैं। सारे ब्रह्मांड को चलाने वाली कोई सत्ता है, शक्ति है। जैसे बल्ब जलता है, तो पता चलता है कि इलैक्ट्रीसिटी है।
- भगवान का भजन डर से, मतलब से ना करें; बल्कि समझदारी से करें-प्रेमपूर्वक करें।
- कोई मुश्किल आने पर विपरीत परिस्थितियों में हमारी समझदारी पता चलती है कि उस समय हम केवल प्रभु व संत का ही एकमात्र आसरा पकड़े रखते हैं क्या ?
- हमें साधु की बात का भरोसा नहीं रहता... जीव में दुर्बलता बनी रहती है। 'बल पाने का उपाय' बताते हुए श्रीजी महाराज ने वचनामृत गढडा मध्य 63 में बहुत अच्छी बात करी कि जिसका जीव अतिशय बल को पाया होगा उसके सामने अंतःकरण की वृत्तियाँ टिक नहीं पाएंगी। उसके मन व जीव के बीच कशमकश नहीं होगी।

  जीव दुर्बल हो तो बल पाने का उपाय यह है कि–

  भगवान के भक्तों की सेवा में लग जाएं। तो जीव अतिशय बल को पा जाएगा।

- भगवान के भक्त स्वभावयुक्त होने के कारण भले कैसे ही दिखाई पड़ें, पर प्रभु व संत के संबंध से वे दिव्य हैं और इनकी सेवा करेंगे तो हमारा जीव बल को पाएगा। भगवान और भगवान के भक्तों की सेवा के बराबर जीव के बल पाने का अन्य कोई उपाय नहीं है।
- प.पू. काकाजी ने 'ब्रह्मप्रवाह' में लिखे पत्र में एक बात लिखी थी–
  शास्त्रों में बताई परोक्ष की नवधाभक्ति की अपेक्षा
  प्रेमलक्षणा भक्ति अधिक
  और
  प्रेमलक्षणा भक्ति की अपेक्षा
  निर्दोषबुद्धि युक्त पराभक्ति अधिक है
  और
  सबसे अधिक–
  भगवान, संत व उसके भक्तों की कसनी की भक्ति करेंगे, तो उसके फलस्वरूप
  जीतेजी हमारे स्वभाव का रुपांतर हो जाएगा।
  भक्तों की कसनी सहन करेंगे तो स्वभाव बदल जाएंगे।
- मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की बातों में है कि करोड़ जन्म तक अंतर्दृष्टि करने पर भी जो फल ना मिले, वह सच्चे संत के वचन से करने में एक महीने में ही मिल जाए। लेकिन, भरोसा होना चाहिए कि वे जो कहें वो करने में ही माल है !
- गुरुहरि योगीजी महाराज के आशीर्वाद कहो या कुछ भी– पर मुझे इतना पक्का था कि प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और प.पू. बा जो कह रहे हैं-वो भले मेरी समझ में नहीं आता, मेरे दिमाग में चाहे फिट नहीं बैठता, लेकिन बात उनकी ही सही है। आज भी प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेब जैसों के बारे मेरे मन में यही है कि महाराज मुझ से पहले तो उनके रहेंगे।
- यह सारा भक्तों का टोला जगत से एकदम अलग-ग्रुप है। दिखने में हम चाहे जगत के लोगों जैसे ही दिखाई पड़ते हों, लेकिन हमारी कक्षा अलग है। जैसे शेर का बच्चा भेड़ों के साथ रहने लग जाए, तो वह भेड़ों जैसा ही हो जाए... भेड़ों की तरह ही डरे, भेड़ों की तरह 'में-में' करे। इस तरह हम सारे अक्षरधाम के मुक्त हैं। लेकिन यहां सबके साथ रहते हुए जगत के लोगों के व्यवहार की तरह हमारा व्यवहार बन गया... कुछ परेशानी आ जाए तो हम डर जाते हैं, ज्योतिष-तांत्रिक, झाड़-फूंक वाले के पास भागते हैं... हाय-तौबा, रोना-धोना,दौड़ाभागी करने लगते हैं... जबकि हम भूल जाते हैं कि हम तो कैसी समर्थ सेरेछाया में हैं... काल, कर्म, माया हमें छू नहीं सकते !

✡✡✡✡✡

चातुर्मास के नियम.....

(1 जुलाई 2001, रविवार से 26 नवम्बर 2001, सोमवार तक)

1. छोटी-छोटी हर एक दैनिक क्रियाओं का आरम्भ भगवत्स्वरूप संत की स्मृति समेत एकाध मिनिट जपयज्ञ या अजपाजप करके ही करें।
2. जिन्हें सुविधा हो वे-शाम की धून व कथा में मंदिर आएं। जो ना आ पाएं वे अपने घर पर सुबह 20 मिनट धून व सायं आरती के बाद 20 मिनिट धून अचूक करें।
3. प.पू. काकाजी की 'पुष्प समाधि' की रोज 31 प्रदक्षिणा करें। जो रोज ना आ पायें वे चातुर्मास के दौरान जब भी मंदिर आएं तब 51 प्रदक्षिणा कर जायें।
4. सावन का पूरा महीना यानि–21 जुलाई से 19 अगस्त तक एक बारी भोजन लें।
5. 1 जुलाई-नियम की एकादशी, 12 अगस्त-जन्माष्टमी, 29 अगस्त-जलझीलनी एकादशी, 26 नवम्बर-कार्तिक शुक्ला एकादशी–इन चारों दिनों अवश्य व्रत रखें।
6. अवतार पुरुषों व भगवत्स्वरूप संतों की जीवनी एवं वचनामृत, स्वामी की बातें, पत्र संजीवनी, ब्रह्मप्रवाह व मोती बिखरे चौक में जैसे अध्यात्मग्रंथों एवं 'भगवत् कृपा' सत्संग पत्रिका के मननीय लेखों का रोज नियम से अध्ययन करें या आधा घंटा संतों की परावाणी टेप द्वारा सुनें या तो वीडियो कैसेट द्वारा दर्शन व कथा का लाभ लें।
7. रोज सुबह या सायं या रात्रि को चालीस मिनिट तेज़ वॉकिंग करें।

विशिष्ट नियम

'स्वामिनारायण महामंत्र द्विशताब्दी' के इस वर्ष में हम सभी को इस मंत्र की शक्ति का अनुभव कराने, बल देने गुणातीत स्वरूपों ने–संतों ने स्वामिनारायण महामंत्र लेखन की अलख जगाई है। जब ऐसे प्रगट गुणातीत स्वरूपों ने हमें मौजरूप यह अमूल्य मौका दिया है, तो उनके वचन से महामंत्र लिखने का विशिष्ट नियम इस चातुर्मास दौरान रखें।

✡✡✡✡✡

प्रत्यक्ष प्रभु का संबंध एवं शिक्षा

हम सभी जानते हैं कि हमारे बच्चे उच्च व अच्छी शिक्षा प्राप्त करें, वह प.पू. गुरुजी की तहेदिल से ख़्वाईश रहती है। सो, सत्संग समाज के बच्चों को प्रोत्साहित करने प.पू. गुरुजी ने अब की एक घोषणा करी है कि– श्री अक्षरपुरूषोत्तम (स्वामिनारायण) मंदिर-दिल्ली से जुड़े जो बच्चे निम्न प्रकार से उच्च स्तर के अंक प्राप्त करेंगे, उन्हें हर साल स्कॉलरशिप दी जाएगी।

कक्षा—1-5 90% व इससे अधिक ✶ कक्षा—6-12 85% व इससे अधिक

लड़कों को **योगी डिवाईन सोसाईटी–दिल्ली** की ओर से तथा लड़कियों को **अक्षरज्योति महिला केन्द्र** की ओर से यह स्कॉलरशिप दी जाएगी।

बच्चे केवल उच्च अंक प्राप्त करें वही हमारा लक्ष्य नहीं है, अपितु इसके साथ-साथ जीवन के केन्द्र में संत को रख कर एक निष्ठावान आदर्श व्यक्ति बनें यह हमारा उद्देश्य है।

सो–स्कॉलरशिप उन्हीं बच्चों को दी जाएगी जो अच्छे अंकों के साथ-साथ...

- **नियमितरुप से मंदिर या सत्संग केन्द्र की सभा में हाज़िर रहते हों।**
- **जिन बच्चों के जीवन में संत का या ऐसे भगवदिय का स्थान प्रथम हो। अर्थात्–सत्संग से जुड़े हों और एक दिव्य जीवन की ओर अग्रसर हों।**
- **घर में अपने माता-पिता व बड़ों के साथ जिनका व्यवहार सुशील हो-उनका आदर करते हों व आज्ञा में रह कर दूसरों के लिए आदर्शरुप हों।**

सूचना– *इस वर्ष आपका अर्जीपत्र-मार्कशीट की एटेस्टेड कोपी के साथ 5 जुलाई, 2001–गुरुपूर्णिमा तक निम्न पते पर भेज दें। इस अवधि के बाद आपकी अर्जी स्वीकार्य नहीं रहेगी।*

श्री प्रभाकरजी

'श्री अक्षरपुरूषोत्तम (स्वामिनारायण) मंदिर'

ताड़देव, काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-III, दिल्ली-110 052

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 1.7.2001 रविवार – देवशयनी एकादशी, व्रत
चातुर्मास प्रारंभ

(2) दि. 5.7.2001 गुरुवार – गुरुपूर्णिमा (चन्द्रग्रहण होने के कारण 4.7.2001 को गुरु पूजन करेंगे)

(3) दि. 17.7.2001 मंगलवार – एकादशी, व्रत

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'Tardeo', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5483035
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393